|| श्री श्रीमद् भागवत महापुराण पाठ संकल्प ||

(संस्कृत में संकल्प :)

ॐ विष्णवे नमः , ॐ विष्णवे नमः , ॐ विष्णवे नमः
अद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे , वैवस्वत मन्वन्तरे , अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूः लोके जम्बुद्विपे भरतखण्डे भारतवर्षे उत्तराखंड राज्ये हरिद्वार जनपदे मायापुर क्षेत्रे भूपतवाला नगरे पतित पावनी गंगा तटे अनुभवी आश्रमे नल नामक संवत्सरे वैशाख मासे कृष्ण पक्षे दशमी तिथौ शनि वासरे अज्ञात गोत्रः माता .....पिता .....तस्य ..... प्रथम / द्वितीय / तृतीय पुत्र / पुत्री ..... (अपना नाम) नाम अहं वाचक / श्रोता श्रध्देय स्वामी रुपेश्वरानंद जी महाराज सन्निकटे धर्म अर्थ काम मोक्ष सिध्दयर्थे मम मातृकुल , पितृ कुल , पत्नी कुलांतरगत समस्त ज्ञात अज्ञात पितृणाम् दुर्गति निवृत्यर्थे सद्गति प्राप्तयर्थे च श्री विष्णु रूप परमात्मा देवता प्रसन्नार्थे च श्रीमद् भागवत महापुराण वाचनम् / श्रवणम् अहं करिष्ये |

(हिंदी में संकल्प :)

मैं माता .....देवी एवं पिता .....से उत्पन्न तथा अज्ञात गोत्र धारणीय ---------- नामक वाचक / श्रोता आज वैशाख कृष्ण पक्ष दशमी तिथी पर श्रध्देय स्वामी रुपेश्वरानंद जी के सान्निध्य में भारतवर्ष में स्थित उत्तराखंड राज्य हरिद्वार जनपद मायापुर क्षेत्र भूपतवाला नगर गंगा तट पर स्थित अनुभवी आश्रम में भगवान विष्णु रूप परमात्मा की प्रसन्नता के लिए , धर्म अर्थ काम मोक्ष की सिध्दी हेतु तथा मेरे पिता कुल के , मेरे माता कुल के , मेरी पत्नी कुल के दुर्गति को प्राप्त हुए, प्रेत आदि योनी को प्राप्त हुए समस्त ज्ञात अज्ञात पितृओं , पूर्वजों की दुर्गति निवारण हेतु तथा सद्गति प्राप्ति हेतु श्रीमद् भागवत महापुराण वाचन / पठन का संकल्प करता / करती हूँ .

श्री विष्णु रूप परब्रहम परमात्मा मेरा कल्याण करें तथा मेरी संकल्प पूर्ण करे ....

विशेष :

- संकल्प प्रथम दिन ही बोला जाता है , प्रतिदिन नही ! संकल्प केवल हाथ में जल लेकर ही बोल सकते है ! यदि किसी की इच्छा हो तो पानी के साथ अक्षत , तुलसी दल , दूब , बेलपत्र , स्वर्ण धातु आदि वस्तुएं भी पानी के साथ लें सकते है !
- दान करते समय , अन्न/धन/ वस्तु दान के समय , ब्रहम भोजन (भण्डारा) के समय , स्नान , पूजन , जप , अनुष्ठान , श्राद्ध , तर्पण, विवाह आदि में संकल्प करना ही चाहिए ! तभी इन पुण्य कर्मों का उचित फल प्राप्त होता है ! ऐसा शास्त्र वचन है !

- संकल्प किसी भी भाषा में कर सकते है ! संकल्प संस्कृत में ही हो यह आवश्यक नही, परन्तु संस्कृत भाषा का संकल्प श्रेष्ठ माना जाता है ! संकल्प करते समय आपको यह ज्ञात होना चाहिए की , आप किसी कार्य हेतु और क्या संकल्प कर रहे है !

- संकल्प स्वयं ही पढना चाहिए अथवा किसी अन्य के द्वारा भी पढ़वाया जा सकता है ! परन्तु उच्चारण आपके माध्यम से ही होना चाहिए !

- संकल्प में तिथि , कार्य , उद्देश्य का स्पष्ट उल्लेख आ जाना चाहिए !

- स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम

+91 – 7607 233 230